व्यावहारिक निर्देशिका

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

व्यावहारिक निर्देशिका*

इकाई की रूपरेखा

1.0 परिचय

1.1 सिद्धांत क्या है?

1.2 मानवविज्ञान में सिद्धांत का अध्ययन क्यों करें?

1.3 हमें सिद्धांतों की आवश्यकता क्यों है?

1.4 मानवशास्त्रीय सिद्धांतः विहंगावलोकन

1.5 सिद्धांत और क्षेत्रकार्य

1.6 सारांश

1.7 संदर्भ

अधिगम के उद्देश्य

इस निर्देशिका को पढ़ने के बाद, शिक्षार्थी निम्न बातों को समझने में सक्षम होंगे:

- मानवशास्त्रीय कार्यों में सिद्धांत की आवश्यकता को समझना;
- सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान के सिद्धांतों को समझना; और
- क्षेत्रकार्य के साथ सिद्धांत को एकीकृत करना।

1.0 परिचय

इस व्यावहारिक निर्देशिका में हम उदाहरणों की मदद से यह समझाने की कोशिश करेंगे कि कैसे सिद्धांत और क्षेत्रकार्य परस्पर जुड़े हुए हैं और हम आदर्श रूप से सिद्धांत और आंकड़ों के संग्रह के बीच कैसे वैकल्पिक हैं। क्षेत्र कार्य करने का मुख्य उद्देश्य केवल आंकड़ा एकत्र करना नहीं है बल्कि इसे एक उद्देश्य के लिए एकत्र करना है, अर्थात् समझ और स्पष्टीकरण के उद्देश्य के लिए। इसके लिए हमें अवधारणा की आवश्यकता है और सिद्धांतीकरण के बिना अवधारणा नहीं की जा सकती है। चूंकि किसी ऐसी चीज को समझने के लिए जो हमारे मानवविज्ञानी होने के लिए मौलिक और प्राथमिक है, जैसे संस्कृति और समाज, हमें अवधारणा की आवश्यकता है, क्योंकि ये संस्थाएं ठोस नहीं हैं, उनका कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है सिवाय इसके कि हम उन्हें कैसे बनाते हैं, और यही अवधारणा निर्माण की प्रक्रिया है।

यह स्पष्ट है कि जब तक हमारे पास हमारी अवधारणाएं नहीं हैं, हमारे पास आंकड़े एकत्र करने का कोई तरीका नहीं है, क्योंकि हम नहीं जान पाएंगे कि हम क्या ढूंढ रहे हैं। जैसे जब हमें क्षेत्रकार्य शुरू करना होता है तो हमें एक क्षेत्र या अध्ययन का स्थान और अध्ययन का विषय चुनने की आवश्यकता होती है । लेकिन हम अध्ययन के विषय या स्थान या क्षेत्र का चयन कैसे कर सकते हैं जब तक कि हम यह नहीं

* **योगदानकर्ता:** प्रोफेसर सुभद्रा मित्रा चन्ना, पूर्व प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय एंव डॉ. रुखशाना जमान, मानवविज्ञान विभाग, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

समझते कि हम अपने अध्ययन की वस्तुओं को कैसे परिभाषित और परिसीमित करते हैं? उदाहरण के लिए, यदि हम एक गाँव का अध्ययन करने का निर्णय लेते हैं, तो पहले प्रश्न का उत्तर देने की आवश्यकता है कि, 'एक गाँव क्या है?' आप सोच सकते हैं कि यह बहुत सरल है, कोई भी स्थान जिसे आधिकारिक तौर पर गाँव के रूप में नामित किया गया है, लेकिन जब हम क्षेत्र कार्य करने के लिए जाते हैं, तो यह इतना आसान नहीं है। एक क्षेत्र में बहुत सारे गांव हो सकते हैं, किसी को यह जानने की आवश्यकता हो सकती है कि गाँव कितने प्रकार के होते हैं? क्या गांवों का कोई मौजूदा वर्गीकरण है? क्या किसी ने गांव को परिभाषित किया है? इसलिए, हमें पुस्तकों पर वापस जाना होगा और पढ़ना शुरू करना होगा। हम जो पढ़ते हैं, वह पहले से ही मौजूदा अवधारणाओं और संकल्पनाओं के रूप में लिखा गया है, हम जो दिया गया है उसे स्वीकार कर सकते हैं, फिर उस स्थिति में हम जो पहले ही कहा जा चुका है, उसकी पुष्टि करेंगे, या जो लिखा गया है हम उसका विरोध कर सकते हैं, और उस स्थिति में, हम फिर से संकल्पना करेंगे और शायद नए सिद्धांत या एक अलग सिद्धांत के उपयोग की ओर इशारा करेंगे। इसी तरह एक शिक्षक के रूप में अक्सर ऐसे छात्रों का सामना करना पड़ता है जो कहते हैं, ''लेकिन यह गाँव वैसा नहीं है जैसा मैंने किताब में पढ़ा था,जिसे गांव के रूप में परिभाषित किया गया था'', तो क्या करना है। आप मौजूदा अवधारणा को लें, और अपने आंकड़ों के अनुसार उस पर काम करें और उसका पुनर्निर्माण करें। लेकिन तब कोई कह सकता है कि हमें पहले अवधारणा की आवश्यकता क्यों है, हमें सिद्धांत की आवश्यकता क्यों है। एक सिद्धांत आपको एक शुरुआत देता है, जहां से आप शुरू कर सकते हैं। एक बार आपके पास एक परिभाषा हो जाने के बाद, आप इसे संशोधित कर सकते हैं, इसमें जोड़ सकते हैं या इसे अस्वीकार कर सकते हैं। तो, सिद्धांत और आंकड़ा संग्रह के बीच का संबंध एक दो–तरफा द्वंद्वात्मक संबंध है, वे एक दूसरे का ख्याल रखते हैं।

इस प्रकार, इस व्यावहारिक निर्देशिका का उद्देश्य आपको यह समझाना है कि सिद्धांत क्या है, आप सिद्धांत को अनुभवजन्य कार्य से कैसे जोड़ सकते हैं। विषय–संक्षेप कैसे लिखें और क्षेत्र कार्य कैसे करें, इस पर उक्त भाग पहले से ही BANC-102 और BANC-105 पाठ्यक्रमों में शामिल किए गए हैं। इस निर्देशिका के माध्यम से हम केवल क्षेत्र कार्य के संदर्भ में सिद्धांत की स्थिति की व्याख्या करेंगे।

1.1 सिद्धांत क्या है?

एक सिद्धांत हमें बुनियादी आधार या प्रतिमान (मॉडल) देता है जिसका उपयोग हम आंकड़े एकत्र करने से पहले करते हैं, क्योंकि हमें यह नहीं पता होगा कि हमें क्या एकत्र करने की आवश्यकता है, जब तक हम यह नहीं जानते कि हम कौन से मूल आधार को पहले से दिया हुआ मान रहे हैं और हम किसके ऊपर एक चर के रूप में शोध करने जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, यदि हम समाज का अध्ययन करने जा रहे हैं, तो पहले हमारे पास समाज के संबंध में कुछ बुनियादी आधार होने चाहिए, एक मूल आधार किसी चीज के बारे में एक धारणा है जो पहले से दी गई है और जिसका हम विरोध नहीं करते हैं। समाज को परिभाषित करने से पहले हम किन बुनियादी आधारों पर विचार कर सकते हैं? क्या हम इसे एक बंधी हुई इकाई के रूप में लेते हैं? क्या हम इसे जनसंख्या या भौगोलिक क्षेत्र के संदर्भ में परिभाषित करते हैं? क्या हम इसे स्थिर या गतिशील के रूप में समझते हैं? यदि हम सामान्य की अवधारणा के संदर्भ में बुनियादी आधार के बारे में बात कर रहे हैं,तो यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण

प्रश्न है। हम आमतौर पर पाते हैं, कि यह हमारी सामान्य समझ को संदर्भित करता है कि हम चीजों को सामान्य रूप से कैसे मानते हैं। जब हम किसी समाज का अध्ययन करना शुरू करते हैं, तब क्या हम विवाह को सामान्य सामाजिक जीवन का एक दिया हुआ और स्वीकृत हिस्सा मानते हैं ? तो क्या हम एक परिवार के अस्तित्व को दिए गए रूप में लेते हैं? क्योंकि, जब हम किसी क्षेत्र में पहुंचते हैं, तो हम पहले से ही कुछ बुनियादी धारणाओं, सामान्य स्थिति के कुछ विचारों और प्रत्याशा के बारे में कुछ मान्यताओं से परिचित होते हैं। हम सामान्य रूप से यह मानते हैं कि जब हम समाज का अध्ययन करने जा रहे हैं, तो हम यह मान लेते हैं कि शादी और परिवार इसका हिस्सा बनने जा रहे हैं। लेकिन मान लीजिए कि हम ऐसे स्थान पर पहुंच जाते हैं जहां लोग शयनगृह में रहते हैं, उनका विवाह या परिवार नहीं है, जैसे कि इजराइली किबुत्ज, तो हमारा आधार बदल जाएगा। हम अब ऐसी जगह शादी का अध्ययन नहीं कर सकते जहां लोग शादी नहीं करते हैं, इसलिए हमें अन्य सिद्धांतों और अन्य आधारों की तलाश करनी होगी। हमें समाज को परिभाषित करने के तरीके को बदलने की आवश्यकता हो सकती है और हम किस बुनियादी आधार का उपयोग करेंगे।

तो, एक सिद्धांत हमें कुछ बुनियादी आधारों, कुछ अपेक्षित संस्थाओं, घटनाओं और कुछ चीजों के बारे में अपेक्षाओं को बिना प्रमाण के प्रदान करेगा, जिनको हम सामान्य रूप से पता करने की कोशिश करते हैं। कभी–कभी ये पूर्वकल्पित धारणाएँ होती हैं और कभी–कभी स्व–पूर्ति की भविष्यवाणियों की तरह, शोधकर्ता यह देखने के लिए कि वास्तव में क्या हो रहा है के बजाय यह साबित करने में अधिक शामिल हो जाता है कि सिद्धांत में क्या दिया गया है । इसलिए, यह एक ऐसा नुकसान है जिससे बचने की सलाह दी जाती है, जैसे कि भले ही हम एक सिद्धांत से शुरुआत कर रहे हों, हमें एक खुला दिमाग रखना चाहिए कि इसमें संशोधन और परिवर्तन की आवश्यकता हो सकती है, इसे अस्वीकार या प्रतिस्थापित करने की आवश्यकता हो सकती है।

उदाहरण के लिए, पिछली शताब्दी की शुरुआत में प्रचलित एक बहुत लोकप्रिय सिद्धांत संरचनात्मक–कार्यात्मकता को लें।। संरचनात्मक–कार्यात्मकता के कुछ बुनियादी आधार थे, कि समाज एक सामान्य स्थिति में थे और सामाजिक एकजुटता एक आदर्श थी। यह माना जाता था कि समाज तब तक संतुलन की स्थिति में रहता है जब तक कि इसमें हस्तक्षेप नहीं किया जाता है और सामाजिक संरचना (स्वयं, एक निर्माण) के सभी भाग, और कार्यात्मक के प्रत्येक भाग संपूर्ण के काम करने के लिए परस्पर जुड़े होते हैं। एक बुनियादी धारणा यह भी थी कि समाज एक जीव की तरह बंधे और संपूर्ण थे। अब सामाजिक संरचना की इस अवधारणा को नए सिरे से परिभाषित किया गया है, विभिन्न तरीकों से समझा गया है और खारिज भी किया गया है। लेकिन यह संरचनात्मक–कार्यात्मक सिद्धांत का एक अभिन्न अंग था। यह इसका मूल प्रतिमान था।

अब इन धारणाओं को देखते हुए, यह पाया गया कि सभी मानवविज्ञानी प्रत्येक संस्था के कार्यों को जो वे देख सकते थे, जैसे प्रत्येक अभ्यास, अनुष्ठान और भाषाई उपयोग के कार्यों को खोजने के लिए समर्पित थे । इस हद तक कि उन्होंने जानबूझकर उन आंकड़ों की अनदेखी की जो उनकी मूल धारणाओं के विपरीत थे या नहीं थे। जब उनका अनुसरण ऐतिहासिक मानवशास्त्रियों द्वारा किया गया, तो संघर्ष सिद्धांतकार जैसे मार्क्सवादी; के अधिकांश स्पष्टीकरण और निष्कर्ष अपर्याप्त पाए गए।

लेकिन तब संघर्ष और मार्क्सवादी सिद्धांतों की भी आलोचना हुई थी। मानवविज्ञान में सिद्धांत के पहले चरण ने इस मूल धारणा का पालन किया कि समाज का विज्ञान संभव था। कि हम सामाजिक वैज्ञानिकों के रूप में जो भी आंकड़े एकत्र करते हैं, वह एक वैज्ञानिक विश्लेषण की कठोरता के अधीन हो सकता है। लेकिन शुद्ध विज्ञान की यह धारणा थी कि हर घटना में एक सच्चाई होती है। उदाहरण के लिए, यदि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, और जब तक यह सिद्ध न हो जाए, तब तक यह सत्य बना रहता है। लेकिन सामाजिक विज्ञान और मानविकी के लिए चीजें इतनी सरल नहीं थीं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमें अध्ययन करने के लिए संस्थाएं नहीं दी जाती हैं। हमारे पास केवल अवधारणाएँ हैं जो पहले से ही सिद्धांत से निर्मित हैं, उन मूल मान्यताओं से जो हम शुरू करते हैं। समाज, या संस्कृति, या परिवार जैसी कोई ठोस इकाई नहीं है, हम उनका निर्माण करते हैं जैसे हम उनकी कल्पना करना चाहते हैं, और यह निर्माण एक सिद्धांत के माध्यम से होता है।

एक सिद्धांत को एक रिश्ते के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसे सहज रूप से सही माना जाता है। लेकिन कोई किसी सिद्धांत को न तो सिद्ध कर सकता है और न ही अस्वीकृत। एक सिद्धांत से उत्पन्न होने वाली किसी भी परिकल्पना को केवल सिद्ध या अस्वीकृत किया जा सकता है। लेकिन अगर किसी के पास पहले से ही एक उत्तर है, तो आंकड़े को धारणा या पहले से ही दी गई परिकल्पना में शामिल करने की कोशिश की जाती है। जैसे यदि किसी के मन में एक कार्यात्मक सिद्धांत है, तो अगर किसी घटना को समझने या समझाने के लिए कहा जाता है, तो एक सिद्धांत को मूल रूप से इस उद्देश्य के लिए उपयोग किया जाता है, व्यक्ति इसकी कार्यक्षमता को दिखाएगा, न कि इसके विरोधाभासी या विघटनकारी पहलुओं को। जैसे आज के मानवशास्त्रियों ने यह प्रश्न पूछा है कि जब मानवविज्ञानी औपनिवेशिक शासन के समय समाजों का अध्ययन कर रहे थे, तो उन्होंने उपनिवेशवाद के परिणामस्वरूप हुए व्यवधान, पीड़ा और तबाही पर कोई ध्यान क्यों नहीं दिया? इन समाजों को हमेशा शांतिपूर्ण, सुखी और संतुलन में कैसे वर्णित किया गया? आज, उदाहरण के लिए, यदि कोई छात्र संरचनात्मक–कार्यात्मक सिद्धांत से परिपूर्ण किसी क्षेत्र में जाता है, तो उसे यह सबसे अवास्तविक लगेगा, क्योंकि यदि कोई इस बात पर ध्यान देता है कि वास्तव में उस क्षेत्र चाहे वह ग्रामीण क्षेत्र हो या शहरी क्षेत्र में क्या हो रहा है, तो उसे जीवन की जटिलताएं, दुख, सामाजिक व्यवधान और सब कुछ दिखाई देगा। यह कहकर कन्या भ्रूण हत्या के 'कार्य' की व्याख्या नहीं की जा सकती है कि यह जनसंख्या को नियंत्रित करने का एक अच्छा तरीका है।

यहां हम सही और गलत स्पष्टीकरण के प्रश्न पर आते हैं। अब अगर हम ऐसा कहते हैं, और कुछ मानवशास्त्रियों ने वास्तव में कहा था कि अतीत में, यह गलत नहीं था। अगर हम किसी भी आबादी में महिलाओं को मार दें तो उसका आकार अपने आप छोटा रह जाएगा। लेकिन अब, उदाहरण के लिए नारीवादी सिद्धांत के आधार को देखते हुए, क्या यह सही या स्वीकार्य प्रकार की व्याख्या होगी?

जब हम मानव समाज के साथ कार्य कर रहे हैं, तो सही और गलत प्रत्यक्षवादी अर्थों में 'तथ्यात्मक' या वैज्ञानिक नहीं हैं। अतीत में मानवविज्ञानी ने जिन लोगों के साथ कार्य किया,उन्हें 'अन्य' मानकर अध्ययन किया। यह फिर से मानवविज्ञान का एक प्रमुख प्रतिमान था, कि शोधकर्ता और शोध के बीच एक स्पष्ट अलगाव किया गया था। इसलिए, अगर लोगों ने अपनी बेटियों को मार डाला, तो यह उनकी चिंता थी, यह मानवविज्ञानी के लिए केवल व्याख्या करने का विषय था, ना कि न्याय करने का।

तो, 'सांस्कृतिक सापेक्षवाद' की धारणा ने मानवविज्ञानी को वस्तुनिष्ठ तरीके से विश्लेषण करने की अनुमति दी। लेकिन आज बहुत से मानवविज्ञानी इस दृष्टिकोण से सहमत नहीं होंगे।

एक सिद्धांत घटनाओं के बीच अस्थायी संबंध के बारे में एक कथन है, जो निगमानत्मक और तार्किक रूप से पहुंचा है। उदाहरण के लिए, सामाजिक विकास का सिद्धांत विभिन्न प्रकार के समाजों के अवलोकन पर आधारित था, लेकिन इस प्रतिमान के साथ कि मानव प्रजाति एक है जिसकी एक संस्कृति है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला गया कि प्रेक्षित संस्कृति के अंतर वास्तव में सांस्कृतिक विकास के चरण थे। अब यह एक सामान्यीकृत सिद्धांत था और जिसे एक भव्य सिद्धांत के रूप में जाना जाता है। एकत्र किए गए साक्ष्य का उपयोग सिद्धांत की वैधता को प्रदर्शित करने के लिए किया गया था, लेकिन चूंकि किसी के पास यह साबित करने के लिए कोई वास्तविक सबूत नहीं था कि घटना की कौन सी स्थिति पहले आई और कौन सी बाद में, इसलिए पूरे सिद्धांत को नव–विकासवाद सिद्धांतों के संदर्भ में पुनः निर्माण किया गया। उदाहरण के लिए, प्रमुख बहसों में से एक, वंशवाद के बारे में था, चाहे मातृत्व पहले आए या पितृवंश और बहस कभी समाप्त नहीं हुई। इसलिए नव–विकासवाद ने उन प्रमुख चरों की पहचान करने की कोशिश की जिन्हें मापा जा सकता है, उदाहरण के लिए लेस्ली व्हाइट ने ऊर्जा सिद्धांत का प्रस्ताव रखा, कि विकास के चरण को उस विशेष समाज में उपयोग की जाने वाली ऊर्जा की मात्रा से पहचाना जा सकता है। जूलियन स्टीवर्ड ने बहुरेखिय विकासवाद सिद्धांत का प्रस्ताव रखा जो एक संस्कृति और उसके पर्यावरण के बीच द्वंद्वात्मक संबंधों पर निर्भर करता था। स्टीवर्ड की मुख्य परिकल्पना यह थी कि संस्कृति और पर्यावरण दोनों एक–दूसरे को संशोधित करते हैं, और संस्कृति विकसित होती है क्योंकि उसे उस वातावरण के अनुकूल होना पड़ता है, जो संस्कृति के परिणामस्वरूप बदल गया है। ये दोनों सिद्धांत पद्धतिगत रूप से अव्यवहारिक साबित हुए और खारिज कर दिए गए।

इसलिए, हम देखते हैं कि स्वीकार किए जाने के लिए एक सिद्धांत को तार्किक और साथ ही पद्धतिगत रूप से व्यावहारिक होना चाहिए। यही कारण है कि मानवशास्त्रीय सिद्धांत अध्ययन के प्रारंभिक चरण में प्रस्तावित भव्य सिद्धांतों की तुलना में अधिक व्यावहारिक, जमीन से जुड़ा हुआ, स्थितिजन्य सिद्धांतों के कार्य करने योग्य हो गए हैं। आज अधिक मानवीय दृष्टिकोण पर भी जोर दिया जाता है, लोगों को अध्ययन की वस्तुओं के बजाय समान भागीदार के रूप में माना जाता है। इसलिए, आज हमने नैतिकता की धारणाओं को क्षेत्रकार्य में, आंकड़ा संग्रह में और विश्लेषण में भी शामिल किया है।

बदलते समय के साथ जिस आधार पर सिद्धांत खड़े थे, वह बदल गया है। अब शोधकर्ता दूर का पर्यवेक्षक, केवल एक अभिलेखी नहीं रह गया है, बल्कि उस समुदाय का हिस्सा माना जाता है जिसका वह अध्ययन कर रहा है, वे उसके जैसे ही इंसान हैं। उसे सहानुभूति और उसी के अनुसार प्रतिक्रिया देनी चाहिए, इसलिए सिद्धांत बनाने के लिए अब एक विहंगम दृष्टि की आवश्यकता नहीं है, बल्कि एक शामिल और लगे हुए सिद्धांत की आवश्यकता है, जैसा कि हाशिए के मानवविज्ञानी द्वारा उत्तर–औपनिवेशिक आलोचना के उदय और मानवविज्ञान के विघटन के साथ किया जा रहा है। उत्तर–आधुनिक युग पहले आने वाली हर चीज के पुनर्निर्माण के लिए समर्पित रहा है। उत्तर–आधुनिक सिद्धांत के प्रमुख आधारों में से एक आधार यह था कि सिद्धांत वस्तुनिष्ठ रूप से नहीं बनाया गया है, बल्कि यह विश्लेषक के अपने

जीवन के अनुभव और ऐतिहासिक स्थान का एक व्यक्तिपरक उत्पाद है। यह उत्तर–औपनिवेशिक आलोचना के साथ शुरू हुआ जिसने संरचनात्मक–कार्यात्मकता जैसे सिद्धांतों को सिद्धांत निर्माताओं के दिमाग के उत्पाद के रूप में समझाया, जो पश्चिमी समाज और संस्कृति का हिस्सा थे, जिनके पास विश्लेषक होने की शक्ति थी, जबकि जिन्हें अध्ययन का विषय बनाया गया था वे सामान्यतः मूल निवासी या उपनिवेशित लोग थे। यह शक्ति समीकरण सिद्धांत–निर्माण और विश्लेषण दोनों की प्रक्रिया का अभिन्न अंग था। तो, जो सत्य या स्पष्टीकरण के रूप में दिया जा रहा था या जिसकी व्याख्या विश्लेषक द्वारा की गई थी और वे जिन लोगों के बारे में अध्ययन कर रहे थे, उनके बारे में जो मान्यताएं बनाई गई, उसे सत्य माना गया।

इसलिए, जब मानवविज्ञानी की पहचान बदली तो सिद्धांत बदल गए। अब बहुत अलग दृष्टिकोण और सिद्धांत सामने आए, जो लोग पहले अध्ययन का विषय थे, वे अब शोधकर्ता बन गए, इसमें महिलाएं, सीमांत लोग, स्वदेशी मानवविज्ञानी आदि शामिल थे।

अब यह स्थापित हो गया है कि सिद्धांत के बीच एक अपरिहार्य संबंध है, जो कि बुनियादी प्रतिमानों का एक परिप्रेक्ष्य और धारणा है, और मानवविज्ञानी का व्यक्तिपरक स्थान है।

सिद्धांत बनाने में और समाज और अध्ययन की गई सामग्री के बारे में हमारी समझ में शोधकर्ता और अध्ययन की वस्तु के बीच संबंध है। सिद्धांत भी अपने समय के उत्पाद हैं। इसलिए, आज जब एक शोधकर्ता क्षेत्र में जा रहा हो, तो वर्तमान बौद्धिक माहौल के साथ–साथ शोध करने की वर्तमान स्थितियों से अवगत होना चाहिए। सिद्धांत बनाना और उसके अनुप्रयोग तब बदल गए जब शोधकर्ता की पहचान को शोध किए जा रहे लोगों के साथ मिला दिया गया, जब उनके बीच कोई शक्ति पदानुक्रम नहीं था। इसलिए आज अनुसंधान अधिक व्यस्त और अधिक सहानुभूतिपूर्ण हो गया है। आज एक शोधकर्ता कन्या भ्रूण हत्या को ठंडी वस्तुनिष्ठता के साथ नहीं देखेगा, बल्कि इससे निपटने के लिए शायद एक क्रियात्मक मानवविज्ञानी बन जाएगा।

1.2 मानवविज्ञान में सिद्धांत का अध्ययन क्यों करें?

जैसा कि आपने इस पाठ्यक्रम सामग्री के सिद्धांत खंड में पढ़ा है, अब तक शिक्षार्थी सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान में मौजूद विभिन्न सिद्धांतों से भली–भांति परिचित हो चुके हैं। मानवविज्ञान में सिद्धांत का विकास विषय के ऐतिहासिक विकास, इसके शक्ति समीकरणों में बदलाव और सत्ता और इतिहास में वैश्विक बदलाव की कहानी है।

बदलते समय और संबंधित प्रतिमानों के आधार पर सिद्धांतों में भी बदलाव आया है। यदि हम आत्मज्ञान के युग को देखें, तो हम देखते हैं कि विचारक इस अवधारणा के दायरे से बाहर जा रहे थे कि सब कुछ एक सर्वोच्च व्यक्ति द्वारा बनाया जा रहा था। इस प्रकार, यह समझने के लिए ध्यान केंद्रित किया गया कि धार्मिक व्याख्या के बाहर, मनुष्य सहित चीजें कैसे विकसित हुईं। प्रारंभ में, प्रश्न मानव की विविधता और विकास की व्याख्या करने से संबंधित था,जब एक बार दैवीय सृजन का प्रतिमान जैविक और सांस्कृतिक दोनों रूप से प्राकृतिक सृजन और विकास में से एक में बदल गया। जैसे–जैसे मानवविज्ञान ने प्रगति की, प्रत्येक संस्थान के कार्य को अन्य संस्थानों के

संदर्भ और संबंध में समझने के लिए ध्यान केंद्रित किया गया, जिससे नृवंशविज्ञान पद्धति का विकास हुआ। इस तरह के अध्ययनों का संचालन करने के लिए, मानवविज्ञानी ने समाज के लोगों के साथ रहकर, उस समाज के सदस्य के रूप में, समाज को करीब से देखना शुरू कर दिया, जिसे हम क्षेत्रकार्य या नृवंशविज्ञान अध्ययन के रूप में जानते हैं। जब 'मूल निवासी' ने अपना स्वयं का अध्ययन करना शुरू किया, तो बाद के मानवशास्त्रीय सिद्धांतों ने अपना ध्यान कहीं और केंद्रित किया। अब यह क्षेत्र गोरे यूरोपियों का 'स्वर्ग' नहीं रह गया था, बल्कि 'मूल निवासियों' ने अपने विकास का अध्ययन स्वयं शुरू कर दिया था। चिंतनशील और व्याख्यात्मक पहलू अब आदर्श बन गए।

1.3 हमें सिद्धांतों की आवश्यकता क्यों है?

जैसा कि पहले ही संकेत दिया गया है, किसी भी चीज को समझने के लिए उसे एक अवधारणा में बदलना होगा। मानव मन कुछ भी तब तक नहीं समझ सकता जब तक कि उसे वर्गीकृत, चिन्हित और नामित न किया जाए। उदाहरण के लिए, जब हम बोलते हैं, तो हम अवधारणाओं और चिन्हों के संदर्भ में बोलते हैं। जैसे, यदि मैं कहूँ, 'यहाँ एक कुर्सी है'; कुर्सी एक अवधारणा है जिसे पहले से ही एक साझा भाषा के माध्यम से जाना जाता है। अगर हमें नहीं पता होता कि कुर्सी क्या होती है, तो हम उसका वर्णन ऐसे कर रहे होंगे जैसे एक ऐसी वस्तु जिसके चार पैर, एक आसन आदि हैं। हम संक्षेप लिपि में भाषा का उपयोग करते हैं क्योंकि चीजें उन अवधारणाओं में परिवर्तित हो गई हैं जिनका उपयोग करने के लिए हमारे दिमाग को प्रशिक्षित किया जाता है।

इसी तरह, जैसा कि सिद्धांत सामाजिक घटना को अवधारणाओं में अनुवादित करता है, यह कई श्रेणियों को एक चिन्ह में रखता है, जिसे सिद्धांत से परिचित सभी लोग समझते हैं। उदाहरण के लिए, 'परिवार' मानवविज्ञानी द्वारा समझा जाने वाला एक शब्द है, और यह भी एक तरह से आम लोगों से अलग है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम मानवशास्त्रीय सिद्धांतों से परिचित हैं। जैसा कि हम कहते हैं, हर सिद्धांत या विषय का अपना 'शब्दजाल' होता है। ऐसे शब्द, वर्गीकरण इत्यादि हैं, जो उस विषय की सैद्धांतिक सामग्री का हिस्सा हैं। उदाहरण के लिए, एक बार जब आप मानवविज्ञान से जुड़ जाते हैं, तो आप 'एकल परिवार', संयुक्त परिवार' जैसे शब्दों से परिचित हो जाते हैं और परिवार और रिश्तेदारी के बारे में मानवशास्त्रीय सिद्धांतों के माध्यम से घर और परिवार के बीच का अंतर समझ सकते हैं।

सभी सिद्धांत भव्य सामान्यीकरण के बारे में नहीं हैं, बल्कि अवधारणाओं को बनाने और समझने के बारे में हैं, जो तब स्वयं विषय का हिस्सा बन जाते हैं। आज बहुत कम लोग मॉर्गन के नातेदारी के विकास के सिद्धांत से सहमत हैं, लेकिन इस सिद्धांत द्वारा बनाई गई अवधारणाएं, जैसे 'नातेदारी', ' नातेदारी शब्दावली', वर्णनात्मक और वर्गीकृत नातेदारी मानवविज्ञान की भाषा का हिस्सा बन गई हैं। तो, सिद्धांत क्या करता है, एक भाषा को वर्गीकृत करता है, उसे संकेतबद्ध करता है और उसका निर्माण करता है जिससे विषय को परिभाषित किया जाता है।

सिद्धांतों और उनके द्वारा बनाई गई अवधारणाओं को विषय की सीमाओं के बाहर साझा किया जा सकता है, जिससे हम अंतःविषय अनुसंधान करने में सक्षम हो सकते

हैं। कभी–कभी हम अन्य विषयों से अवधारणाएँ उधार लेते हैं और अंतःविषय सिद्धांत बनाते हैं।

क) अपने सिद्धांत खंड से एक उदाहरण लेते हुए कल्चर एंड पर्सनैलिटी स्कूल को याद करें जहां सामूहिक व्यक्तित्व का प्रश्न, जो समग्र रूप से एक संस्कृति और एक विशेष वातावरण में एक बच्चे को लाने की सांस्कृतिक प्रथाओं द्वारा इसकी समझ का प्रतिनिधित्व करता है,जिसका रूथ बेनेडिक्ट ने 'राष्ट्रीय चरित्र' पर अपने काम में विश्लेषण किया था। बेनेडिक्ट ने फ्रायडियन सिद्धांत के मूल प्रतिमान को उधार लिया था, जो बचपन के अनुभव को वयस्क व्यक्तित्व से जोड़ता है, और फिर इस प्रतिमान को मानवशास्त्रीय शब्दों में इस्तेमाल किया। फ्रायड द्वारा समझी गई व्यक्तित्व की अवधारणा को संस्कृति की मानवशास्त्रीय अवधारणा से जोड़ते हुए, उन्होंने तर्क दिया कि चूंकि बच्चों के पालन–पोषण की प्रथाओं को एक संस्कृति में साझा किया जाता है, इसलिए एक विशेष संस्कृति में बच्चों के बचपन के अनुभव समान होते हैं, और इसलिए फ्रायड के सिद्धांत का बहिर्वेशन करके, दोनों अवधारणाओं को एक साथ रखकर हम यह कह सकते हैं कि यह एक 'राष्ट्रीय चरित्र' है, जो एक शिशु के पालन–पोषण की सामूहिक सांस्कृतिक प्रथा का उत्पाद है। यह भी एक उदाहरण है कि कैसे एक नया सिद्धांत सामने आता है। यह दो विषयों के प्रतिमानों को मिलाकर सामने आ सकता है।

ख) मार्गरेट मीड ने समोआ के 'कमिंग ऑफ ऐज' के अपने अध्ययन में दिखाया कि किशोर, एक अवधारणा है जो केवल अमेरिकी संस्कृति में मौजूद है। सामोन में कोई मनोवैज्ञानिक किशोर नहीं है, और बच्चे बिना किसी कठिनाई के वयस्कता के लिए एक सहज अवस्था परिवर्तन करते हैं। इसलिए, मीड ने 'बायोलॉजी ऐज डेस्टिनी' की फ्रायड की धारणा की भी आलोचना की; कुछ ऐसा जिसे उसने अपने काम में यह दिखाने के लिए भी इस्तेमाल किया कि जिसे स्त्री और पुरुष के रूप में समझा जाता है, वह भी सांस्कृतिक निर्माण है न कि जैविक निर्धारक।

ग) इसी तरह मानवशास्त्रीय सिद्धांत, अन्य विषयों और विभिन्न सामाजिक संस्थानों को भी प्रभावित कर सकते हैं। आपने इकाई 1 में देखा कि, कैसे मॉर्गन के कुछ विचार को , बाद में फ्रेडरिक एंगेल्स द्वारा अपने कार्य, ओरिजिन ऑफ द फैमिली, प्राईवेट प्रोपर्टी एंड द स्टेट (1884) में लिया गया। क्लिफोर्ड गीर्ट्ज और विक्टर टर्नर द्वारा सीमांतता और अनुष्ठानों पर दिए गए सिद्धांतों को पर्यटन और प्रदर्शन अध्ययनों द्वारा लिया गया है। सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान में मौजूदा सिद्धांतों ने अन्य विषयों के लिए रास्ते खोल दिए हैं। इस प्रकार, हम अन्य विषयों में भी अवधारणाओं और विचारों को आकार देने में मानवशास्त्रीय सिद्धांतों के प्रभाव को देखते हैं।

घ) सिद्धांतों द्वारा उत्पन्न अवधारणाएं और विचार मानवविज्ञान के भीतर उप–विषयों की सीमाओं को पाटने में मदद करते हैं (बर्नार्ड: 2007:130)। अब तक हम सभी जानते हैं कि मानवविज्ञान के दायरे में कई उप–विषय हैं और जैसे–जैसे हम अपने शोध के साथ आगे बढ़ रहे हैं, वैसे–वैसे और भी विषय जुड़ते जा रहे हैं। यहाँ, आइए मानव आकार अध्ययन विज्ञान (किन्थ्रोपोमेट्री) और कर्मचारी परिस्थिति विज्ञान (एर्गोनॉमिक्स) का उदाहरण लेते हैं। क्या आप बता सकते हैं कि यह समाज और संस्कृति के अध्ययन से कैसे जुड़ा है? मानव आकार अध्ययन विज्ञान

और कर्मचारी परिस्थिति विज्ञान रचना मानवविज्ञान का हिस्सा हैं जो उन खेलों के लिए बेहतर उपकरण बनाने में मदद करता है जहां शरीर के अंग का संचलन होता है और हमारे रोजमर्रा के उपयोग के लिए भी। जब आप किसी दुकान पर अपने कपड़े खरीदने जाते हैं तो क्या आपको हर बार अपना माप देना पड़ता है? या जब आप ऑनलाइन कपड़े खरीदते हैं तो आप अपना आकार कैसे चुनते हैं? कुछ ऐसे मानक माप हैं जो आपको आपके शरीर की ऊंचाई और वजन के अनुसार कपड़े चुनने में मदद करते हैं। तो यह कहाँ से आता है? विभिन्न मानव आबादी का अध्ययन जो हमारी जरूरतों के लिए लेखों की बनावट और उसका निर्माण करने में मदद करता है। इस प्रकार, उपविषय परस्पर जुड़े हुए हैं। हालांकि मानवविज्ञान की सभी शाखाओं में समान विशेषज्ञता का दावा करना एक कठिन कार्य होगा। फिर भी, सिद्धांत सीमाओं को पाटने में मदद कर सकते हैं ताकि समाज और संस्कृति की समझ के लिए उनका प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सके।

च) जैसा कि पहले ही समझाया गया है सिद्धांत और उनके द्वारा उत्पन्न अवधारणाएं, एक दिशा देने में मदद करती हैं और क्षेत्र कार्य के लिए एक मौजूदा प्ररूपता प्रदान करती है। जब हम क्षेत्र में जाते हैं, तो हम बड़ी मात्रा में आंकड़े एकत्र करते हैं। कभी–कभी आंकड़ों का ढेर हमें असहाय छोड़ देता है और यह सवाल उठता है कि आंकड़ों को कैसे समझा जाए और कैसे उसका विश्लेषण किया जाए। सिद्धांत हमें आंकड़े को वर्गीकृत और व्यवस्थित करने, परिकल्पना उत्पन्न करने और चीजों को खंडों में रखने के लिए एक प्रारंभिक निर्देश प्राप्त करने में मदद करता है। हम बाद में इन खंडों को संशोधित और विखंडित भी कर सकते हैं, लेकिन सिद्धांत की मदद से हम क्षेत्र कार्य की शुरुआत कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, जब हम भारत में एक गाँव का अध्ययन करने जाते हैं, तो हम कुछ चीजों को पहचान सकते हैं, जो पहले से ही वर्गीकृत और व्याख्या की गई हैं, जैसे कि जाति व्यवस्था, एक प्रमुख जाति का अस्तित्व, संस्कृतिकरण, संकीर्णता जैसी प्रक्रियाएंय संस्कृति के तत्व जैसे महान परंपरा और छोटी परंपरा आदि। मौजूदा सिद्धांत समझ को आसान बनाते हैं। एक बार जब हमारे पास क्षेत्र कार्य शुरू करने के लिए एक आधार होता है तो हम आंकड़ों के अनुसार उसमें आलोचना और परिवर्तन भी कर सकते हैं है। उदाहरण के लिए, हम एम.एन. श्रीनिवास द्वारा दी गई परिभाषा के अनुसार स्थानीय प्रभुत्वशाली जाति के पात्रों की तुलना करना शुरू कर सकते हैं। लेकिन हम इसे स्थानीय आंकड़ों के अनुसार बदल और संशोधित कर सकते हैं। इसे 'सिद्धांत में जोड़ने' के रूप में जाना जाता है। यह शोध करने के मुख्य उद्देश्यों में से एक है।

अ) मौजूदा सिद्धांतों को सत्यापित करने और लागू करने के लिए।

ब) मौजूदा अवधारणाओं और उनके संबंधों को संशोधित और परिवर्तित करके उन्हें जोड़ने के लिए।

1.4 मानवशास्त्रीय सिद्धांतः विहंगावलोकन

सबसे पहले, क्योंकि सिद्धांत मनुष्यों द्वारा बनाए गए हैं, और मनुष्य उनकी सामाजिक स्थितियों और संदर्भों के उत्पाद हैं, संदर्भ बदलते ही सिद्धांत बदल जाते हैं। दूसरे, ज्ञान हमेशा संचित होता है। विद्वानों की प्रत्येक पीढ़ी पिछली पीढ़ी से सीखती है और

क्योंकि ज्ञान पहले से मौजूद है, वे उस पर निर्माण करने में सक्षम हैं। तीसरा, प्रतिमान परिवर्तन होते हैं, अर्थात जब विषय की मूल धारणाएं स्वयं ही बदल जाती हैं। इसका अर्थ है कि हमारे समझने और समझाने के तरीके में बड़ा बदलाव आया है। यह तब होता है, जब बड़ी मात्रा में ज्ञान संचय के बाद, चीजों पर एक लंबे समय के परिप्रेक्ष्य का उदय होता है। कभी–कभी बड़े पैमाने पर सामाजिक परिवर्तन अस्तित्व के संपूर्ण दर्शन को हिला देते हैं।

ज्ञानोदय के युग से पहले, यह माना जाता था कि सब कुछ सर्वोच्च व्यक्ति द्वारा बनाया गया था। लेकिन फ्रांसीसी क्रांति और अमेरिकी क्रांति के साथ इसमें एक बड़ा बदलाव आया। इन क्रांतियों से पता चला कि मनुष्य के पास समाज को बदलने की शक्ति है, और समाज कोई ईश्वरीय रचना नहीं है, क्योंकि यदि ऐसा होता, तो मनुष्य इसे नहीं बदल सकता था। इस अहसास के साथ–साथ मनुष्य अन्य समाजों और संस्कृतियों के संपर्क में आया, जब यूरोपीय लोगों ने विभिन्न उद्देश्यों के लिए यात्राएं शुरू कीं। यहां वे ऐसे लोगों से मिले जो 'उनके जैसे नहीं थे', लेकिन अलग थे और उनका वर्णन करने के लिए 'आदिम' शब्द का इस्तेमाल किया गया था। अन्य लोगों के साथ ये संपर्क कुछ समय से चल रहे थे लेकिन तब उन्हें अन्य प्रजाति या अन्य प्रकार के इंसानों के रूप में माना जाता था। लेकिन जीव विज्ञान में प्रगति के साथ, यह स्थापित किया गया था कि मनुष्य एक ही प्रजाति थे, समान लक्षणों और क्षमताओं के साथ, एक सिद्धांत के रूप में विकासवाद उन मतभेदों की व्याख्या करने के लिए आया था जिनका जैविक आधार नहीं था। इसी तरह, औपनिवेशिक काल के दौरान, मानवविज्ञानी आधिकारिक नीतियों और शक्ति अंतर दोनों के माध्यम से उपनिवेशों की मूल आबादी के लिए अधिक रहस्योद्घाटन करने वाले थे, जिनका वे करीब से अध्ययन करने में सक्षम थे। बाद में, मालिनोस्की के ट्रोब्रिएंड्स के लिए आधिकारिक निर्वासन और उनके लंबे और मजबूर रहने के कारण, क्षेत्रीय परंपरा की शुरुआत हुई। शांतिपूर्ण शासन के औपनिवेशिक कार्यसूची और सद्भाव की इच्छा के कारण 'कार्य' और कार्यात्मक के साथ–साथ संरचनात्मक–कार्यात्मक, संरचनावाद, मार्क्सवाद, प्रतीकात्मक और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण पर अधिक जोर दिया गया।

मानवशास्त्रीय सिद्धांतों में कुछ प्रमुख प्रतिमान परिवर्तन हुए हैं। पहला आधार जिस पर मानवशास्त्रीय सिद्धांतों का निर्माण किया गया था, वह था प्रत्यक्षवाद,जिसमें प्रमुख धारणा यह थी कि समाज को एक वैज्ञानिक जांच के अधीन किया जा सकता है और एक वस्तु की तरह अध्ययन किया जा सकता है। इस प्रतिमान का पालन करने वालों ने सोचा कि वे वैज्ञानिक सत्यों की तरह 'सत्य' के साथ सामने आ सकते हैं, और इसलिए एक निश्चित प्रकार की पद्धति का पालन किया। इसमें शारीरिक रूप से अध्ययन की वस्तु के करीब होना शामिल था, लेकिन भावनात्मक रूप से नहीं। यहां हालांकि मानवशास्त्रियों ने उन लोगों के करीब रहकर क्षेत्र कार्य किया, जिनका उन्होंने अध्ययन किया, उन्होंने कभी भी अपनी भावनाओं और लोगों के साथ जुड़ाव को प्रकट नहीं किया। उन्होंने 'वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता' को बनाए रखा, जिसे वे मानते थे, इसलिए आंकड़ा संग्रह अक्सर मापन, सांख्यिकीय और मात्रात्मक आंकड़ों के संग्रह, प्रारुपता के निर्माण और सामान्यीकरण की प्रवृत्ति के साथ मानकीकृत विधियों के माध्यम से किया जाता था। उदाहरण के लिए, रैडक्लिफ–ब्राउन ने नातेदारी व्यवहार का नियम दिया। उनके द्वारा जीव विज्ञान में प्रयोग की जाने वाली तुलनात्मक पद्धति का उपयोग अक्सर सामान्यीकरण और तुलना में सहायता के लिए किया जाता था। संपूर्ण पारंपरिक नातेदारी सिद्धांत ऐसी विधियों पर आधारित हैं।

फिर व्याख्यात्मक सिद्धांतों के प्रतिमान में बदलाव आया, जिसने संस्कृति को अधिक बारीकी से देखने और संस्कृति के कर्ताओं की प्रेरणाओं और स्पष्टीकरणों को ध्यान में रखते हुए विश्लेषण करने पर जोर दिया। इन मानवविज्ञानियों ने और भी अधिक गहराई से क्षेत्र कार्य किया लेकिन मात्रात्मक विश्लेषण से दूर रहे, क्योंकि उन्हें लगा कि मोटे विवरण (थिक डिस्क्रिप्शन) के माध्यम से वास्तविकता को बेहतर तरीके से प्राप्त किया जा सकता है जो न केवल कार्रवाई का वर्णन करेगा बल्कि कार्यों के पीछे भावनाओं और प्रेरणाओं का वर्णन करेगा। क्लिफोर्ड गीर्ट्ज इस पद्धति के प्रमुख निर्माता थे।

सत्तर के दशक के बाद से, मानवविज्ञान उत्तर–औपनिवेशिक और उत्तर–आधुनिकतावादी आलोचनाओं के साथ अधिक महत्वपूर्ण हो गया। उत्तर आधुनिकतावादी यह नहीं मानते थे कि समाज का वस्तुपरक विश्लेषण संभव है क्योंकि सामाजिक स्थिति एक अंतःक्रियात्मक है। नया प्रतिमान अंतर–व्यक्तिपरकता की ओर था, जहां अब यह समझा गया था कि समाज और संस्कृतियों के बारे में ज्ञान पर्यवेक्षक के व्यक्ति के माध्यम से मध्यस्थ होता है, और वस्तुनिष्ठ सत्य जैसा कुछ भी नहीं होता है। इससे कार्यप्रणाली में बदलाव आया जब अवैयक्तिक आंकड़ा संग्रह से, एक संवाद पद्धति का उपयोग किया जा रहा था। यहां सूचनादाता को अब वस्तु के रूप में नहीं बल्कि सहयोगी के रूप में देखा जाने लगा। अब हम उपयोग किए जा रहे कथनों और व्यक्तिगत आंकड़ों का उपयोग पाते हैं। स्वनृवंशविज्ञान (ऑटो एथनोग्राफी) भी इसी पद्धति का एक हिस्सा है।

घटना वैज्ञानिकों ने आज के समय में बड़े पैमाने पर कब्जा कर लिया है। आलोचनात्मक मानवविज्ञानी और अन्य जैसे नारीवादी भी इस दृष्टिकोण का उपयोग कर रहे हैं जो स्थिति और अनुभवात्मक है। यह दृष्टिकोण या सिद्धांत मानता है कि विद्वान के अनुभव के अलावा कोई सच्चाई नहीं है। सूचनादाताओं के संबंध में विद्वान क्षेत्र में जो अनुभव करता है, वह वही है जिसमें आंकड़े शामिल होते हैं। विश्लेषण फिर से क्षेत्र कार्यकर्ता और क्षेत्र के बीच एक सहयोग है। इसलिए, सभी ज्ञान प्रासंगिक हैं और इसके लिए यह आवश्यक है कि आंकड़ा संग्रह के संदर्भ को बहुत सावधानी से वर्णित किया जाए।

कुल मिलाकर, व्यक्तिपरक, व्याख्यात्मक और घटना विज्ञान के रूप में ज्ञान–से–ज्ञान उत्पादन के उद्देश्य उत्पादन की संभावना से एक प्रतिमान बदलाव है। आज उन आवाजों को बोलने की इजाजत देने पर भी जोर दिया जा रहा है जो पहले हाशिए पर थीं और मूक थीं। तो, हमारे पास नारीवादी मानवविज्ञान, विचित्र(समलैंगिक) मानवविज्ञान, तीसरी दुनिया के दृष्टिकोण से मानवविज्ञान, ब्लैक विद्वानों और दलित विद्वानों के मानवविज्ञान, हाशिये और पदानुक्रम में नीचे से मानवविज्ञान दृष्टिकोण हैं। अधिक राजनीतिक बनने के लिए एक समग्र बदलाव होता है, जो यह अहसास कराता है कि शक्ति ज्ञान उत्पादन को रोकती है और शुद्ध निष्पक्षता जैसा कुछ नहीं है।

आंकड़ा संग्रह और विश्लेषण की प्रक्रिया में छात्र को आज शोध करने और सिद्धांत के उपयोग के निम्नलिखित नैतिक पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए।

- अपने और क्षेत्र के बीच पूर्ण समानता बनाए रखना चाहिए।
- सूचनादाताओं की आवाजों को आगे रखना चाहिए और चीजों का विश्लेषण ऐसे करना चाहिए जैसे वे इसे देखते हैं।

- पूर्ण सहानुभूति रखने के लिए और किसी की मदद करने या संकट में एक साथ काम करने जैसी भागीदारी से नहीं कतराना चाहिए।
- क्षेत्र का कल्याण और हित सर्वोपरि रखना चाहिए।

1.5 सिद्धांत और कार्यक्षेत्र

इस खंड में हम एक उदाहरण के साथ यह समझाने की कोशिश करेंगे कि हम अपने विषय और क्षेत्र कार्य को किसी मौजूदा सिद्धांत से कैसे जोड़ सकते हैं। आइए एक विषय के रूप में 'अनुष्ठान' का उदाहरण लें। अब इस अनुष्ठान के दायरे में हम किस पहलू का पता लगा सकते हैं? यह अपने आप में एक बड़ा सवाल है कि अनुष्ठान को कैसे प्रासंगिक बनाया जाए। अब ऐसे कई तरीके हैं जिनसे हम अनुष्ठान को देख सकते हैं, आइए उनमें से कुछ की सूची बनाएं।

क) समाज में अनुष्ठानों का उदय।

ख) अनुष्ठानों का महत्व और पर्यावरण से उनका परस्पर संबंध।

ग) आधुनिकीकरण, शहरीकरण, वैश्वीकरण, महामारी आदि के कारण अनुष्ठानों में जो परिवर्तन हुए हैं।

घ) अनुष्ठान और समाज में बदलती गतिशीलता।

च) प्रदर्शन के रूप में अनुष्ठान: इस खंड के तहत शिक्षार्थी यह पता लगा सकते हैं कि अनुष्ठान कैसे किए जा रहे हैं और क्यों?

अब, हमने अनुष्ठान के संदर्भ में कम से कम पांच उप–विषयों का चयन किया है, और भी कई विषय हैं जिन्हें इस सूची में शामिल किया जा सकता है। लेकिन यह समझने के लिए कि अब इसे एक सिद्धांत के साथ कैसे जोड़ा जाए, आइए इन उदाहरणों के साथ आगे बढ़ते हैं। हम यहां बहुत ही सरल उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं, जिनसे शिक्षार्थी संबंधित हो सकते हैं। आपके लिए ऐसे और मामलों के बारे में सोचने के लिए ये केवल उदाहरण हैं जहां आप अपने अनुभवजन्य कार्य का पता लगाने और प्रस्तुत करने के लिए अपने सैद्धांतिक ज्ञान को एक साथ ला सकते हैं। कृपया अपने व्यावहारिक कार्य में उन्हीं उदाहरणों का उल्लेख न करें।

क) समाज में अनुष्ठानों का उदय–

इस शीर्षक के तहत एक शिक्षार्थी अनुष्ठानों के संदर्भ को समझने का प्रयास कर सकता है। उदाहरण के लिए, एक शादी के दौरान कई रस्में निभाई जाती हैं। ऐसी ही एक रस्म है दूल्हा और दुल्हन का हल्दी से अभिषेक करना (हल्दी समारोह)। कोई भी इस अनुष्ठान की उत्पत्ति को देख सकता है। क्यों दूल्हा और दुल्हन का हल्दी से अभिषेक किया जा रहा है और इस अनुष्ठान स्नान के लिए सात नदियों से पानी क्यों इकट्ठा करना पड़ता है (पारंपरिक रूप से)। आज के परिप्रेक्ष्य में यदि आज भी ये अनुष्ठान हो रहे हैं और सात नदियों से जल एकत्र करने की रस्म कैसे निभाई जा रही है। क्या यह अनुष्ठान अभी भी संभव है? क्या ये सिर्फ प्रतीकात्मक इशारों के रूप में किए जा रहे हैं? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिन्हें शिक्षार्थी खोज सकते हैं।

सिद्धांत घटक: आपको क्या लगता है कि हम इस विषय को परिभाषित करने के लिए किन सिद्धांतों का उपयोग कर सकते हैं। यहां, हम सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान के तहत कई सिद्धांतों के साथ काम कर सकते हैं। इस

तरह के अनुष्ठानों के उद्भव को समझने के लिए पारंपरिक सिद्धांतों का पता लगाया जा सकता है। कोई भी आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकता है कि टायलर ने 'संस्कृति अस्तित्व' के रूप में क्या कहा था। कुछ अनुष्ठानों को यह देखने के लिए खोजा जा सकता है कि क्या संस्कृति के जीवित रहने की अवधारणा अभी भी मान्य है या क्या ये सिद्धांत वास्तव में समाप्त हो गए हैं। हम इसे प्रतीकात्मक और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण से भी देख सकते हैं, क्योंकि यह विषय जीवन चक्र अनुष्ठान से भी संबंधित है। शिक्षार्थी वैन गेनेप के कार्य 'राइट्स डे पैसेज', 'लिमिनलिटी' को विक्टर टर्नर द्वारा परिभाषित या 'की सिंबल्स' में देखने पर विचार कर सकते हैं, जैसा कि शेरी ऑर्टनर ने अपने स्वयं के निष्कर्षों की जांच करने के लिए वर्णित किया है।

ख) अनुष्ठानों का महत्व और पर्यावरण से उनका परस्पर संबंध

यहां यह पता लगाया जा सकता है कि अनुष्ठान पर्यावरण के साथ कैसे जुड़े हुए हैं। समाज किस प्रकार के अनुष्ठानों में पर्यावरण की प्रमुख भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए, मालिनोवस्की के काम में उन्होंने वर्णन किया था कि ट्रोब्रिएंड द्वीपवासी अपने मछली पकड़ने के अभियानों पर जाने से पहले कैसे अनुष्ठान करते हैं। गहरे पानी में सुरक्षित और सफल मछली पकड़ने के लिए, यात्रा की शुरुआत से पहले अनुष्ठान किए जाते हैं, ताकि समुद्र में तूफान की तरह प्रकृति की अनियमितताओं के कारण मछुआरों को कोई नुकसान ना हो। मालिनोवस्की द्वारा सामने लाया गया एक आकर्षक पहलू यह था कि महिलाएं इन अनुष्ठानों का हिस्सा नहीं थीं। इसी तरह, जनजातियों के अपने पवित्र वृक्ष वाटिकाएं हैं जिनकी पूजा की जा रही है, क्योंकि वे अपनी आजीविका के लिए वन उत्पादों पर निर्भर हैं।

सिद्धांत घटक: इस विषय को सांस्कृतिक पारिस्थितिकी के दृष्टिकोण से देखा जा सकता है। प्रकृति, मानव और आत्मा के आधार पर मार्शल शालिन या एल.पी. विद्यार्थी के कार्यों का पता लगा सकते हैं। समाज में किए जाने वाले कुछ अनुष्ठानों में महिलाओं की भूमिका या अनुपस्थिति को समझने के लिए ऐसे विषयों के लिए नारीवादी दृष्टिकोण का भी पता लगाया जा सकता है।

ग) आधुनिकीकरण, शहरीकरण, वैश्वीकरण, महामारी आदि के कारण अनुष्ठानों में जो परिवर्तन हुए हैं

उदाहरण के लिए, 'छठ पूजा' के दौरान सूर्य देव की पूजा की जाती है और सूर्य उदय के दौरान 'अर्घ्य' (सूर्य भगवान को जल चढ़ाने) की रस्म अदा की जाती है। यह अनुष्ठान एक नदी में किया जाता है, जहां पूजा करने वाले लगभग कमर तक पानी में डूब जाते हैं। लेकिन अब, अगर हम महामारी का मामला लें, जहां लोग लगभग घर में कैद हैं, तो यह देखना विचारणीय होगा कि यह अनुष्ठान कैसे किया जा रहा है।

सिद्धांत घटक: यहां, हम उत्तर–आधुनिकतावादी, प्रतीकात्मक और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण का पता लगा सकते हैं।

घ) अनुष्ठान और समाज में बदलती गतिशीलता

आइए एक हालिया बदलाव का उदाहरण लेते हैं जो 'सिंदूर खेला' (एक दूसरे को सिंदूर से लपेटना) की रस्म में आया है जो विशेष रूप से पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा समारोह का हिस्सा है। पहले सिंदूर खेला की रस्म केवल उन विवाहित महिलाओं तक ही सीमित थी जिनके पति अभी भी जीवित हैं, यानी ऐसी महिलाएं जिन्हें अपने माथे पर लाल सिंदूर लगाने की अनुमति है, जो उनकी

विवाहित स्थिति का प्रतीक है। लेकिन हाल के दिनों में, इस प्रतिबंध को हटा दिया गया है और सभी महिलाओं, अविवाहित, विवाहित, विधवाओं, तलाकशुदा और समलैंगिकों का इस अनुष्ठान में भाग लेने के लिए स्वागत किया जा रहा है। यह एक महत्वपूर्ण बदलाव है क्योंकि दुर्गा पूजा जितनी पुरानी परंपरा को तोड़ना अपने आप में कोई आसान काम नहीं है। इसी तरह, आज कई समाजों में अनुष्ठानों के लिए पशु बलि की परंपरा को कद्दू या लौकी जैसी कुछ अन्य वस्तुओं के बलिदान से बदल दिया गया है।

सिद्धांत घटक: फिर से, इस उदाहरण को विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। एक दृष्टिकोण जो तुरंत दिमाग में आता है वह है नारीवादी दृष्टिकोण। इसी प्रकार उत्तर–आधुनिकतावाद के दृष्टिकोण से भी इसका अध्ययन किया जा सकता है। 'प्रमुख प्रतीकों' की अवधारणा और इसके बदलते आयामों को भी ध्यान में रखा जा सकता है।

च) प्रदर्शन के रूप में अनुष्ठान

इस खंड के अन्तर्गत शिक्षार्थी यह पता लगा सकते हैं कि अनुष्ठान कैसे किए जा रहे हैं और क्यों?

सिद्धांत घटक: इस विषय को स्वयं कई दृष्टिकोणों से खोजा जा सकता है। कई विद्वानों ने इस विषय को न केवल प्रति अनुष्ठान के रूप में, बल्कि पर्यटन मानवविज्ञान के संदर्भ में, नृत्य और थिएटर प्रदर्शन आदि को समझने के दृष्टिकोण से खोजा है। कई ने प्रदर्शनों में सीमांतता की अवधारणा की खोज की है।

1.6 सारांश

यह व्यावहारिक निर्देशिका शिक्षार्थियों के लिए यह समझने के लिए तैयार किया गया है कि कैसे सिद्धांत को उनके क्षेत्र कार्य के साथ एकीकृत किया जा सकता है। जैसा कि हमने देखा, समय की आवश्यकता के अनुसार सिद्धांत बदलते रहे हैं। हम सैद्धांतिक पहलुओं में विभिन्न दृष्टिकोण देखते हैं, जिससे यह आकलन करना और यह कहना बहुत मुश्किल हो जाता है कि कौन सा सिद्धांत कहां उपयुक्त है। क्षेत्र कार्य करते समय हम शिक्षार्थियों से आग्रह करते हैं कि वे अपने कार्य के लिए किसी सिद्धांत को स्वीकार या अस्वीकार करने से पहले सोचें। यह सुझाव देने के लिए सिद्धांतों की मजबूत समझ होनी चाहिए कि क्या उनका उपयोग शिक्षार्थी द्वारा प्रस्तावित क्षेत्र कार्य के लिए किया जा सकता है। इस प्रकार, हमने इस निर्देशिका में कई उदाहरणों के साथ इसे समझाने की कोशिश की है।

1.7 संदर्भ

Barnard, Alan. 2007. *Social Anthropology: Investigating Human Social Life.* New Delhi: Viva Books Private Limited.

सुझावित पाठ्य अध्ययन

Barnard, Alan. 2007. *Social Anthropology: Investigating Human Social Life.* New Delhi: Viva Books Private Limited.

Clifford, James and George. E. Marcus. (eds) 1990. *Writing Culture: The Poetics and Politics of Ethnography*. Delhi: Oxford University Press.

Erickson, Paul. A. and Liam D. Murphy. 2008. *A History of Anthropological Theory*. Canada: University of Toronto Press.

Engelke, M. (2018). *How to Think Like an Anthropologist*. Princeton, Oxford: Princeton University Press.

Evans-Pritchard, E.E. 1981. *A History of Anthropological Thought*. London: Basic books.

Geertz, Clifford 1973. *The Interpretation of Culture*. New York: Basic Books.

Gennep, Arnold van 1909. *The Rites of Passage* (trans by Monika B Vizedom and Gabriella L Caffee.) London: Routledge and Kegan Paul

Hall, Edward. T. (1976). *Beyond Culture*. Garden City, N.Y.: AnchorPress/Doubleday, 1976.

Haviland, W.A. 2003. *Anthropology*. Belmont, CA: Wadsworth.

Ingold, Tim. 1986. *Evolution and Social Life*. Cambridge: Cambridge University Press.

2018. *Anthropology: Why it Matters.* Cambridge, UK: Polity Press.

Kaplan, David and Robert A Manners. 1972. *Culture Theory.* Illinois: Waveland Press.

Lewis, I.M. 1976. *Social Anthropology in Perspective: The Relevance of Social Anthropology.* Harmondsworth: Penguin Books.

Harris, Marvin.1968. *The Rise of Anthropological Theory.* New York: Thomas Y. Crowell Company. Reprint 2001 by Alta Mira Press.

Moore, Henrietta, and Todd Sanders. (eds) 2006. *Anthropology in Theory: Issues in Epistemology.* USA: Blackwell Publishing.

Moore, J. 2009. *Visions of Culture: An Introduction to Anthropological Theories and Theorists* (Third Edition). Lanham and New York: Alta Mira Press.

Stocking, G. 1974. *The Shaping of American Anthropology, 1883-1911: A Franz Boas Reader*. New York: Basic Books.